(ipse, 1) pron. pers. tertiae pers. in initio compositorum, ipse, sui, sibi cet. Vid. स्वातम्, स्वम्, स्वस्थ. Etiam ad primam et secundam pers. refertur, v. स्वाधीन. (Huc pertinet prâcrit. A sui, ejus, ipsius in anal. cum A pro वे tui, मे mei; zend. एंड hê, ऽप्टेंड hôi; v.स्वतस् et gr. comp. 341. 2) suus. In. 1.32.34. 5.29. Su. 1.28. Etiam meus, tuus, noster, vester. Un. 39.13.: काययामि स्वाम् म्रवस्थाम conditionem meam; N. 14. 15.: पदानि गणयन् स्वानि गच्छ passus tuos; 24.: स्वम् म्रंशं वितरामि ते partem tuam; Un. 26.3.: धार्यताम् ऋयं स्वहस्ते निचेप: in manu tuà. — Subst. n. proprium, peculium. N. 18.3.26.7. (Cum $\overleftarrow{\mbox{con}}$ pron. pers. cf. lat. sui, gr. οι, σφέ, σφείς e στέ, στείς; lith. saw sibi, sawens sui cet.; slav. sebje sibi, sebe sui cet.; goth. sei-na sui e svei-na; své sicut, instrument. a Them. sva; svi in soi-kunths manifestus, debilitato a in i. Cum Ed possess. cf. lat. suus, gr. σφός, ός; lith. sáwa-s suus, sáwa sua; slav. sooi, soaja, sooe suus, a, um; soo-bodj liber, svo-boda libertas, ubi svo = ह्व in initio comp.; goth. soes n., Them. soesa proprium; germ. vet. suas proprius, Graff 6.903.)

स्त्रका (a praec. s. का) suus, proprius. N. 5.43.16.3.24.42. 25.5.

स्वक्क् 1. 4. (सर्पणि r.) ire, se movere. G. स्वस्क्, स्रक् स्वातम् Ado. (e स्व et गत qui ivit, in acc. neut.) i. q. स्रातमातम् . SAK. 18.7.

स्विङ्ग 1: P. (सर्पापे K. P.; scribitur स्वार्) ire, se movere. (Cf. germ. vet. SUANG vibrare, suingu, suang, suungumés.)

स्त्रच्छ (e सु et म्रच्छ) valde clarus, valde purus. HIT. 25.

स्वच्छन्द (e स्व et छन्द) v. छन्दः

स्वज्, स्वज्ज् 1. 4. (pro स्वज्ज् scribitur स्वज्ज्, gr. 110°).) amplecti. N. 24. 44: भैमोम् ... सस्वज्ञे, RAGH. 13. 70.: अस्वज्ञतः, MAH. 2. 2595.: स्वज्ञमान, 3. 14724.: स्वज्ञिवाः

c. परि (praet. augment. 1. पर्यस्वजे et पर्यघजे, praet. mltf. पर्यस्वज्ञि et पर्यघज्ञि, praet. redupl. परिसस्वजे et परिषयजे) i. q. simpl. N.17. 12. 23. 24.: ताम् परिषयजे MAH. 1. 8000.: परिषस्वजे; 3. 211.: परिषयजे; R. Schl. II. 75. 9.: पर्यस्वजेताम्; II. 83. 10.: परिषयजेन pro व्यज्ञान

c. परि praef. म्राभ id. Part. praes. PAR. R. Schl. II. 44.10.: স্বাসিবাহিন্তান

c. परि praef. सम् id. MAH. 1.3307.

হলারন m. (e হল et রান q.v.) cognatus. BH. 1.45. Collective cognati. BH. 1.28. N. 13.34.

स्वरं 1. P. i. q. श्वट्ट.

ਵਕਰਕ (BAH. e ਦਕ et ਰਕ) liber, qui suae potestatis, sui juris. HIT. 69.13. — Vid. ਦਕਾਰਕਪ

स्वतस् Adv. (е स्व sui, ipse s. तस्) ex se, per se. Ман. 3. 10051.: स्वतः शोभमानः

स्वद् 1. (fortasse e सु et म्रदू edere) 1) ATM. jucunde sapere, jucundi, suavis saporis esse. RIGV. V. 6.7.: ह्व्या ते स्वदनाम् · 2) P. gustare. RIGV. V. 2.2.: स्वदिन देवा उभयानि ह्व्या • Vid. Westerg. et cf. स्वाद् • स्वादु •

eau (e ea et ul a r. ul ponere, dare) 1) f. majorum cibus. 2) Indecl. vox quam pronuntiant ii, qui majoribus dona offerunt. BH. 9.15.

1. বিন্ 1. et 10. p. sonare. R. Schl. II. 65.5.: বিহায়: ...

सह्वन्:; Ghat. 5.: রালরে: হ্বানন: (Vid. মুায়,
মুন্, রায় et cf. lat. sono, hib. sian «a voice, sound,
scream»; fortasse gr. φωνή e σφωνή, ν. হ্ব. Lith. zwanu
sono et slav. ζυεπίδι magis cum রায়া quam cum হ্বান
conveniunt, mutato k in g, deinde in z, ζ = র .)

2. स्वन् 10. म. स्वनयामि et स्वानयामि (म्रवतंसने क तंसने v.) ornare.

स्वान m. (r. 1. स्वान s. म्र) sonus, sonitus, strepitus. N. 21. 5. 25.5.

स्वप् 2. P. etiam 1. P. interdum A. (anom., v. gr. 694.)
1) dormire. MAN. 1.52.: यदा स्विपितिः 54.: सुवं स्व-